श्रेष्ठ समाज के लिए नैतिक, आध्यात्मिक एवं मानव मूल्य प्रेरित

शिक्षा दर्पण

शिक्षा प्रभाग की त्रैमासिक समाचार पत्रिका | अगस्त - 2018 | ब्रह्माकुमारीज़, माउण्ट आबू (राज.)

1

2

1. ज्ञान सरोवर में आयोजित विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों के शिक्षाविदों के महासम्मेलन का उद्घाटन करते हुए संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी, दिल्ली के उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया, लखनऊ केन्द्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर एस.पी.सिंह, कर्नाटक केन्द्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति एच.एम.महेश्वरैय्या, ब्र.कु. मृत्युंजय, ब्र.कु.शुक्ला, ब्र.कु. हरीश शुक्ल, ब्र.कु.पांड्यामणि, ब्र.कु. सुमन, डॉ. आर.पी. गुप्ता तथा अन्य।
2. शान्तिवन में आयोजित 39वाँ अखिल भारतीय बाल व्यक्तित्व विकास शिविर का उद्घाटन करते हुए दादी रतनमोहिनी, ब्र.कु. निर्वैर, ब्र.कु. मुन्नी, ब्र.कु. भूपाल, ब्र.कु. मृत्युंजय, ब्र.कु. शीलू, डॉ. ब्र.कु. हरीश शुक्ल, डॉ. ब्र.कु. ममता तथा अन्य।

संरक्षक
राजयोगी ब्र.कु. निर्वैर
महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़ एवं संरक्षक, शिक्षा प्रभाग
परामर्श दाता
राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय
कार्यकारी सचिव, ब्रह्माकुमारीज़ एवं अध्यक्ष, शिक्षा प्रभाग
राजयोगिनी ब्र.कु. शीलू बहन
उपाध्यक्ष, शिक्षा प्रभाग
कार्यकारिणी
राजयोगिनी ब्र.कु. सुमन
राष्ट्रीय संयोजिका, शिक्षा प्रभाग
डॉ. ब्र.कु. पांड्यामणि
निदेशक, मूल्य और आध्यात्मिक शिक्षा कोर्स
ब्र.कु. शिविका
मुख्यालय संयोजिका, शिक्षा प्रभाग
डॉ. आर.पी. गुप्ता
मुख्यालय संयोजक, मूल्य शिक्षा पाठ्यक्रम
प्रधान सम्पादक
राजयोगी डॉ. ब्र.कु. हरीश शुक्ल
राष्ट्रीय संयोजक, शिक्षा प्रभाग
सह सम्पादक
डॉ. ब्र.कु. ममता, अहमदाबाद
सम्पादक मण्डल
ब्र.कु. सुन्दरलाल, हरिनगर, दिल्ली
ब्र.कु. प्रो. एम.के. कोहली, गुड़गाँव
ब्र.कु. चुनेश, शान्तिवन
प्रकाशक
एज्यूकेशन विंग (RE & RF) एवं ब्रह्माकुमारीज़
प्रकाशन
ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, शान्तिवन, आबू रोड
डिजाइनिंग सेटिंग
वैल्यू एज्यूकेशन ऑफिस, शान्तिवन, आबू रोड

अमृत सूची

❖ **सम्पादकीय:**
शिक्षा में सुधार के कदम

❖ ***Report of The University and College Educators' Conference on***
Values & Spirituality for Empowerment of the Self

❖ 39वाँ अखिल भारतीय बाल व्यक्तित्व विकास शिविर

❖ 39वाँ अखिल भारतीय बाल व्यक्तित्व विकास शिविर की झलकियां

❖ मूल्य शिक्षा कराती है जीवन का यथार्थ बोध

❖ चरित्र हमारा अनमोल खजाना है

❖ दर्जी का भाग्य

❖ रक्षा सूत्र – प्रेम के विस्तार का सूत्र

❖ विभिन्न स्थानों पर हुई शिक्षा प्रभाग की सेवाओं की झलकियां

निवेदन

शिक्षा प्रभाग के सेवा समाचार फोटो सहित तथा स्व-रचित कविता, गीत, लेख इत्यादि वैल्यू एज्युकेशन सेंटर, आनंद भवन, शान्तिवन, आबू रोड के पते पर भेजकर अपना सहयोग प्रदान करें।

E-mail: shikshadarpan@bkivv.org
Mobile No.: +91 94276-38887 / +91 94140 -03961 / +91 94263-44040

डॉ. ब्र.कु. हरीश शुक्ल
राष्ट्रीय संयोजक, शिक्षा प्रभाग, सुखशान्ति भवन (अहमदाबाद)

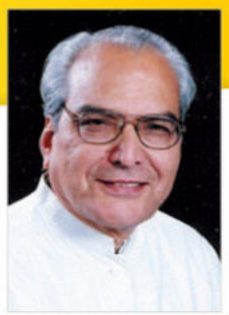

डॉ. ब्र.कु. हरीश शुक्ल
राष्ट्रीय संयोजक,
शिक्षा प्रभाग, ब्रह्माकुमारीज़

सम्पादकीय

शिक्षा में सुधार के कदम

भारतवर्ष में प्रतिवर्ष शिक्षा में सुधार के लिए कई सम्मेलन, महासम्मेलन, कार्यशालाएं, संगोष्ठी इत्यादि का आयोजन किया जाता है। शिक्षा में आमूल परिवर्तन की आवश्यकता सभी प्रबुद्धजनों को महसूस हो रही है। सरकार के द्वारा शिक्षा आयोग का गठन भी किया गया है। देश की वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए शिक्षा में अनेक प्रकार के तकनीकी प्रयोग भी किए जा रहे हैं। गूगल जैसे विशाल वेबसाइट के माध्यम से ज्ञान का संग्रह किया जा रहा है। विश्व स्तर की जानकारी पलक झपकते ही गूगल से मिल जाती है। विश्व संस्कृति और सभ्यता का इतिहास मिनटों में ही मिल जाता है। शिक्षा के माध्यम से अनेक रिसर्च (खोज) हो रहे हैं।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में स्किल डेवलपमेंट के, वोकेशनल कोर्सेज़ भी बनाए गए हैं। जिससे प्रत्येक व्यक्ति आजीविका के लिए कुछ न कुछ अर्थोपार्जन कर सके। आज व्यक्ति के लिए आजीविका के लिए अर्थोपार्जन करना मुश्किल लग रहा है। पढ़े-लिखे छात्र-युवा शिक्षा के माध्यम से कुछ सीखने के बदले जिस दिशा में आगे बढ़ रहे हैं उससे समाज, परिवार, देश अत्यंत चिंतित है। माता-पिता अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा देना चाहते हैं इसलिए वे बच्चों को कम्फर्ट प्रदान करने वाली स्कूलों में भर्ती कराने की दौड़ में लगे हुए हैं। क्या यह सभी सुख-सुविधा सम्पन्न शिक्षा क्षेत्रों में सुधार के लिए आवश्यक है? शिक्षा को प्रोफेशन बनाने वाले व्यापारी शिक्षा में सुधार ला सकते हैं? जिनका शिक्षा से कोई सरोकार नहीं ऐसे राजनेता शिक्षा में सुधार ला सकते हैं? शिक्षा संस्थान व्यापार के केंद्र बन गए हैं। अव्यवस्था, शिक्षकों का अभाव, कर्मचारियों की कामचोरी, शारीरिक-मानसिक अक्षमता इत्यादि कई कारण हैं- शिक्षा के निम्न स्तर के लिए। ऐसे समय में कहीं से आशा की एक किरण दिखाई देती है तो वह एकमात्र मानवीय मूल्यों की शिक्षा है। ऐसे शिक्षा संस्थान आने वाले समय के लिए उचित शिक्षा प्रदान करें। ऐसे शिक्षा संस्थान जो छात्रों-युवाओं को सही दिशा-निर्देश करें। अध्ययन-अध्यापन की मूल्यनिष्ठ प्रणाली को अपनाएं, छात्रों के भविष्य को उज्ज्वल बनाने की ओर अथक परिश्रम करें। ऐसे शिक्षा संस्थान युवाओं को व्यसनों से मुक्त करें, अच्छे नागरिक बनाएं, हिंसा, गुनाहखोरी से दूर रखें। आत्म संतोषपूर्वक अर्थोपार्जन हो। ऐसी तकनीक को अपनाने वाले शिक्षा संस्थान छात्रों के लिए मूल्यों की शिक्षा का बीज डालेंगे तभी छात्र सच्चे अर्थ में मानवीय मूल्यों के वृक्ष बनकर आने वाली पीढ़ी को अपनी छत्रछाया प्रदान कर सकेंगे। नहीं तो वो दिन दूर नहीं कि समाज, परिवार बिखरकर चूर-चूर हो जाएंगे। एक दूसरे को छत्रछाया तो क्या, अपने लिए भी छत्र नहीं बना पाएंगे।

ऐसे समय में मूल्यों की शिक्षा प्रदान करने वाला एकमात्र संस्थान प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय है। यह वह शिक्षा संस्थान है जिसमें भारतीय सभ्यता और संस्कृति की ना मात्र शिक्षा दी जाती है, वरन् मूल्यों को आत्मसात कर आज की शिक्षा प्रणाली में मूल्यों के माध्यम से आमूल परिवर्तन करने के लिए अग्रसर है। यहाँ चरित्र निर्माण के लिए उत्तम शिक्षा प्रदान की जाती है। यह परमात्म प्रदत्त शिक्षा है। 'शिवेतरक्षये' की शिक्षा है। प्रेम, शांति, पवित्रता, बंधुत्व, अहिंसा जैसे विविध मूल्यों को जीवन में धारण करने वाली शिक्षा है। यह शिक्षा ईश्वरीय ज्ञान का भंडार है जिसे शांति के क्षणों में मनुष्यात्मा अंतर्मन में धारण कर भरपूर हो जाती है। यह जीवन की उत्कृष्टता के लिए दी जाने वाली शिक्षा है।

आज मूल्य एवं आध्यात्मिक शिक्षा के महत्व और उद्दात्तता को समझने वाला चिंतक, सात्विक वर्ग तैयार हो रहा है जो इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा चलाने वाली शिक्षा को अपनी-अपनी संस्थानों में चलाने के लिए एम.ओ.यू. द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़ रहे हैं। मुझे यह बताते हुए बड़ा हर्ष हो रहा है कि भारत के करीब 15 से अधिक विश्व विद्यालय मूल्य शिक्षा से जुड़ चुके हैं और कई देश-विदेश के शिक्षा संस्थानों ने इस दिशा में आगे बढ़ने की अपनी उत्सुकता दिखाई है। इसके लिए हमारे ईश्वरीय विश्व विद्यालय में अनेक मूल्य शिक्षा सम्बन्धी सर्टिफिकेट से लेकर मास्टर डिग्री के अभ्यासक्रम तैयार किए हैं और शिक्षा संस्थान इसे कार्यरत कर रहे हैं ताकि मानव मात्र की सर्वांगीण उन्नति हो और हमारा भारत देश पुन: विश्व सत्ता, विश्व गुरू के पद पर अग्रसर हो सके। मानव के दिव्यीकरण की इस दिशा में क्रान्तिकारक प्रोग्राम सकारात्मकता द्वारा मानव मन का **उर्द्धवीकरण** है। **राजयोगा** थॉट लेबोरेटरी की स्थापना का विचार कई प्रबुद्ध महानुभावों ने स्वीकार किया है और कई संस्थानों में इसकी स्थापना भी की गई है।

Report of The University and College Educators' Conference on

Values & Spirituality for Empowerment of the Self

The four day University and College Educators' Conference on the theme **'Values & Spirituality for Empowerment of the Self'** was inaugurated on May 19, 2018 at the Gyan Sarovar Campus of the Brahma Kumaris. With Hon'ble Shri Manish Sisodia, Deputy Chief Minister of Govt. of Delhi as the Chief Guest of this Inaugural Session, the Conference started quite enthusiastically as most of the participants of this event were eagerly awaiting the positive and fruit-yielding discourse during the coming 4 days.

The conference was attended by a large number of Vice-Chancellors, Directors, Professors and educators. Conference had been structured, synthesized and divided into well thought out sessions and was efficiently executed. The theme focuses on the question that is so wide and broad i.e. 'empowering the self'. Naturally that raises some more questions of why and how to empower the self. These questions are elaborately discussed in 4 open sessions, one Panel Discussion and 2 lecture sessions.

That way we find sessions dedicated to the issues like:

- Empowering for shaping the destiny,
- Empowering through thought management and positive thinking,
- Empowering for success in life,
- Empowering for Peace and Happiness

Then comes the question of how to execute the process of empowerment and the answer comes in the last two sessions where we leave the whole initiative to the Educator and treat him/her as inspirational leader. But in the last session that is just the present session, the crux of educator's initiative should be based on Ethics and Spiritual Wisdom.

The Reception Session on May 18 introduced the theme in which the speakers said that discipline and inner strength help one fight even the self and come out victorious with divine values. Another speaker asserted that true education is for life, through life and throughout the life. Rajyogini BK Shielu Didi who is the Vice-Chair-person of the Education Wing discussed the urgent need for empowering the self with the help of values and spirituality in our educational syllabus at all levels of education. She emphasized that along with the IQ and EQ we need MQ and SQ as well.

In the Inaugural Session on May 19 the question was elaborated and discussed further when BK Suman, National Co-ordinator, Education Wing, raised the issue saying that a lack of quality education is leading to depression and aggression among the youth and by failing to attain the desired peace and happiness in life,

one is shaken and completely broken at the end. It was a major theme that with all our money and monetary attainments we cannot bring such a harmonious and disciplined atmosphere as is found here at the Gyan Sarovar. This kind of educational discipline and dedication is needed across the nation. The contention has been that the youth today is more in need of love, compassion, understanding than the dull and mechanical information that is being flooded on him.

Continuing the discussion of self-empowerment speakers went on to say that we have experienced the power of our muscles, wealth, socio-political influence but have failed to be happy. One finds the practicability of positive thinking here in the Rajyoga, values and spirituality. Making his assertions, the Chief Guest in the Inaugural session Sh. Manish Sisodia, Deputy Chief Minister of Govt. of Delhi, opened his remarks with treating the Education Wing of the Brahma Kumaris as an integral part of Indian Society that is rooted in values and spirituality. One shudders to think of the world, full of hatred, violence, sins and injustice that is coming up gradually across the whole human world. Major responsibility lies on education that can take us out of conflict and make our life happy and peaceful on the foundations of spirituality. Moreover the core of education, values, understanding, and self-thinking, are badly missing from our system. Our students may be successful but they are not happy. We need to determine what is the value of the syllabus. Is it just limited to the marks that one can attain in an examination?

Earlier Rajyogi Nirwair Bhai Ji, Secretary General of the Brahmakumaris, through his tele-message emphasized that the universities and institutions of learning empower the youth with knowledge. Rajyogini BK Shukla Didi, Director, Om Shanti Retreat Centre, Gurugram (Haryana) emphasized that values are the cherished ornaments and a strong foundation of human existence. Rajyogini Dadi Ratan Mohini Ji, Joint Chief of the Brahma Kumaris emphasized the need for 'Good Will' and 'Good Wishes' for one and all since we are all the children of one God.

Some of the creatively practical ideas in different sessions are note-worthy I read a few;

- "Values come from what children see in their parents."
- "Charity always begins at home as parents are the role-models."
- "Idol has always been in the stone. It is for the artist to remove the waste and the needless"
- "Knowing one's true identity and realizing it in practice is spiritual intelligence."
- "To maintain inner calm and let go in paradoxical situations is being successful."
- "Meditation is the cultivation of self-awareness."

In this report I wish to highlight the question of managing one's thought and being positive. The Rajyoga Thought Lab is the latest initiative of the Education Wing of the Brahma Kumaris with regard to the spiritual empowerment of man as well as the solution of many of our burning issues and problems. Such labs being established at many educational premises have even started showing their positive results. The youth is encouraged to observe his inner self and his thought process and then decide what is good and satisfying in the long run.

Before I conclude this report I must what most participants felt about the issue of self empowerment. I sum it in "Lamenting the dead and consoling the bereaved family is no solution to the issue." And secondly "One has to face the problem head-on and in this context we need to distinguish between convenience, material comfort and happiness." Perhaps therein lies the root of spiritual empowerment.

This report would be incomplete if I don't express our collective gratitude to Rajyogi BK Mruthyunjaya Ji, Chair-person of the Education Wing and the Executive Secretary of the Brahma Kumaris. He has not just been the motivator and advisor but also the chief executive of all the preparations and initiatives of this and almost every other conference of the Brahma Kumaris. He is the major guiding spirit behind all initiatives of the Education Wing.

Resolution

We, the participants of the 'University and College Educators' Conference on Values and Spirituality for Empowering the Self (2018)' resolve to assess and evaluate our own self and purify ourselves of all our impurities and weaknesses. We also undertake to inculcate values and spiritual virtues to elevate the value system of education to spiritual heights and to empower ourselves and our students to find the divine bliss that the Supreme Father bestows on us.

Prof. BK Ved Guliani,
Hisar

39वाँ अखिल भारतीय बाल व्यक्तित्व विकास शिविर

बच्चों में मूल्यों की कमी और श्रेष्ठ संस्कारों का अभाव चिंताजनक है। नौनिहालों में अच्छे संस्कारों के लिए जीवन में मूल्यों और बौद्धिक स्पर्धा का होना अति आवश्यक है। उक्त विचार ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका डॉ. दादी रतन मोहिनी जी ने व्यक्त किए। वे ब्रह्माकुमारीज़ संस्था के शिक्षा प्रभाग द्वारा दिनांक 22 से 28 मई, 2018 तक आयोजित 39वें अखिल भारतीय बाल व्यक्तित्व विकास शिविर में आये हजारों बच्चों को सम्बोधित कर रही थीं। इस शिविर में पूरे भारत से 2500 से अधिक बच्चों ने भाग लिया।

उन्होंने कहा कि माता-पिता को चाहिए कि वे अपने बच्चों को प्रारम्भ से ही नैतिक मूल्यों के प्रति शिक्षित करें। आज के पीढ़ी को अच्छे संस्कार देना जरूरी है। भौतिकता की चकाचौंध में बच्चों के संस्कार तेजी से बदल रहे हैं जो आने वाले समय के लिए ठीक नहीं है। इसलिए शिक्षा में मूल्यों के साथ बौद्धिक स्पर्धा का होना अत्यंत आवश्यक है।

ब्रह्माकुमारीज़ संस्था के महासचिव ब्र.कु. निर्वैर ने कहा कि बच्चों को जितना प्यार से सिखाएंगे, जल्दी ही उनके मानस पटल पर ये बातें आ जाती हैं। इसलिए नौनिहालों को पढ़ाई के साथ-साथ नैतिक शिक्षा देना बहुत जरुरी है। माता-पिता के साथ शिक्षकों को भी संस्कारों के प्रति सजग होना चाहिए।

शिक्षा प्रभाग के अध्यक्ष ब्र.कु. मृत्युंजय ने कहा कि पिछले 39 वर्षों से हजारों बच्चों की जिन्दगी बदली है। बच्चों ने अपने जीवन में सकारात्मक बदलाव लाकर समाज सुधार के कार्यों में अग्रणी भूमिका निभाई है जिससे समाज की दिशा और दशा में सकारात्मक परिवर्तन आया है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में मूल्य शिक्षा को शामिल करना बहुत जरूरी है क्योंकि बाल्यकाल ही भावी जीवन की नींव है। अच्छे संस्कार ही अच्छा इंसान बनाता है।

शांतिवन की कार्यक्रम प्रबंधिका ब्र.कु. मुन्नी तथा शांतिवन प्रबंधक ब्र.कु. भूपाल ने कहा कि बच्चों का मन एक खाली बोर्ड की तरह होता है। ऐसे में उनके मानस पटल पर किसी चीज का बुरा असर ना पड़े।

शिक्षा प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक डॉ. ब्र.कु. हरीश शुक्ल, शिक्षा प्रभाग के उपाध्यक्ष ब्र.कु. शीलू, प्रो. ब्र.कु. वेद गुल्यानी ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

बच्चों का यह आयोजन 6 दिन तक चला जिसमें भाषण प्रतियोगिता, लम्बी कूद, म्यूज़िकल चेयर, पेंटिंग प्रतियोगिता, वेस्ट से बेस्ट, समूह गीत स्पर्धा, कहानी, डांस प्रतियोगिता, लेमन स्पून, मुरली पठन स्पर्धा, मूल्यनिष्ठ सांस्कृतिक कार्यक्रम, दौड़ इत्यादि प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ। अंत में विजेता बच्चों को पुरस्कृत किया गया तथा सभी बच्चों को सर्टिफिकेट दिया गया। साथ ही बच्चों के लिए पिकनिक कार्यक्रम भी रखा गया।

इस शिविर में विभिन्न विषयों पर संस्था के वरिष्ठ भाई-बहनों ने भी अपने-अपने विचार व्यक्त किए।

ब्र.कु. ललित
अहमदाबाद

शिविर में उपस्थित हजारों नौनिहाल

39वाँ अखिल भारतीय बाल व्यक्तित्व विकास शिविर की झलकियां

'काउण्सिलिंग एण्ड स्प्रीच्युअल हेल्थ' में एम.एससी. पाठ्यक्रम का लॉन्चिंग करते हुए अतिथिगण।

मूल्य शिक्षा कराती है जीवन का यथार्थ बोध

मूल्यों से जीवन में सुख, शान्ति और पवित्रता आती है जिससे जीवन दिव्य गुणों से परिपूर्ण होता है। आध्यात्मिक शिक्षा से हमारे मानवीय सम्बन्धों में मधुरता आती है और सम्बन्ध तनाव रहित हो जाते हैं।

उक्त उद्गार ब्रह्माकुमारीज़ की संयुक्त मुख्य प्रशासिका डॉ. दादी रतनमोहिनी जी ने दिनांक 28 जनवरी, 2018 को शान्तिवन में आयोजित दीक्षांत समारोह में व्यक्त किए।

उन्होंने आगे कहा कि मूल्य शिक्षा एक ऐसी पढ़ाई है जो जीवन को ऊंचाई की ओर ले जाती है तथा घर, परिवार व समाज के प्रति नैतिक जिम्मेवारियों को पूरा करने के प्रति सचेत करते हैं।

डॉ. एन.टी.आर. हेल्थ यूनिवर्सिटी विजयवाड़ा के कुलपति डॉ. सी. वेंकटेश्वर राव ने कहा कि आज समाज के प्रत्येक व्यक्ति को मूल्य शिक्षा की आवश्यकता है। यह महान कार्य ब्रह्माकुमारी संस्था के शिक्षा प्रभाग कर रहा है। वर्तमान समय में नई पीढ़ी में मूल्यों का जो पतन देखा जा रहा है, वह शिक्षा में मूल्य शिक्षा को सम्मिलित न करने का दुष्परिणाम है। मूल्य हमें जीवन की सच्चाइयों का सामना करना सिखाते है।

अन्नामलाई विश्वविद्यालय, तमिलनाडु के डायरेक्टर डॉ. एम. अरूल ने कहा कि मूल्य शिक्षा ग्रहण करना एक पुण्य का कार्य है क्योंकि यह मनुष्य के मन-मस्तिष्क को मनोविकारों से मुक्त करके जीवन जीने की कला सिखाती है जिससे हमारा जीवन स्वयं तथा समाज के लिए आदर्श बनता है। मानसिक कौशल के साथ मूल्यों का जीवन में समावेश जीवन की स्वीकार्यता को व्यापक बनाता है।

यशवंतराव चव्हाण मुक्त विश्वविद्यालय के डायरेक्टर श्री उमेश राजदेरकर ने कहा कि वर्तमान समय में विश्वविद्यालयों द्वारा जो डिग्रियां प्रदान की जा रही हैं, उनका जीवन से सम्बन्ध नहीं रह गया है। वर्तमान शिक्षा विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करने में असफल साबित हो रही है। इसी कारण समाज में अनेक प्रकार की समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं। यह अत्यंत हर्ष की बात है कि ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा शिक्षा में मूल्यों का समावेश करने के लिए अनेक पाठ्यक्रम संचालित करने का सराहनीय प्रयास किया जा रहा है।

शिक्षा प्रभाग के अध्यक्ष ब्र.कु. मृत्युंजय ने कहा कि आज का दिन स्वर्णिम दिन है। आज के दिन हम संकल्प करें कि हम अपने अंदर की ईर्ष्या, द्वेष, नफरत और परचिंतन को विदाई देंगे तथा मूल्यों से अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाएंगे।

ब्रह्माकुमारीज़ दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम के डायरेक्टर डॉ. ब्र.कु. पांड्यामणि ने कहा कि मूल्य शिक्षा के अध्ययन से हम अपने जीवन को सही मार्गदर्शन प्रदान कर सकते हैं क्योंकि यह हमें सकारात्मक चिंतन की कला सिखाकर तनाव, चिंता, अवसाद और भटकाव से दूर करती है।

शिक्षा प्रभाग की उपाध्यक्ष ब्र.कु. शीलू बहन ने कहा कि मूल्य हमारे जीवन को श्रेष्ठ बनाता है। सभी मूल्यों का स्रोत एक परमपिता परमात्मा है जिनसे बुद्धि का योग जोड़ने से हमारे अंदर दिव्यता आती है। शिक्षा प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक डॉ. हरीश शुक्ल ने दीक्षांत समारोह में डिग्री लेने भारत और नेपाल से आये हुए सभी विद्यार्थियों और मंचासीन महानुभावों का स्वागत किया।

मूल्य शिक्षा पाठ्यक्रम के मुख्यालय कोऑर्डिनेटर डॉ. आर.पी. गुप्ता ने सभी का आभार प्रकट किया। डॉ. सरिता दास ने मूल्य शिक्षा और अध्यात्म पाठ्यक्रम करने से प्राप्त हुए अनुभव को सुनाया। मंच संचालन ब्र.कु. सुप्रिया बहन ने रमणीक तरीके से किया। इस अवसर पर काउण्सिलिंग एण्ड स्प्रीच्युअल हेल्थ में एम.एससी. पाठ्यक्रम का इस वर्ष से लॉन्चिंग किया गया।

इससे पूर्व यह समारोह तपस्या धाम से शोभायात्रा के रूप में प्रारम्भ हुआ जिसमें विद्यार्थी 'गाउन, क्राउन और मेडल' पहनकर शान्तिवन परिसर का चक्रण करते हुए कॉन्फ्रेंस हॉल में दीक्षांत समारोह में बदल गई।

ब्र.कु. चुनेश
शान्तिवन

चरित्र रूपी फाउण्डेशन को मजबूत बनाने के लिए पवित्रता चाहिए। यदि पवित्रता की शक्ति कम है तो फिर चरित्र की ऊंची बिल्डिंग एकदम टूट जाएगी और हमारे सम्मान को भी दबा देगी।

चरित्र हमारा अनमोल खजाना है

चरित्र एक सफेद कपड़े की तरह है। चरित्र अमूल्य खजाना है। जीवन की इमारत का फाउण्डेशन हमारा श्रेष्ठ चरित्र है। चरित्र रूपी फाउण्डेशन कच्चा होगा तो जीवन की ऊँची इमारत लम्बे समय तक टिक नहीं सकती। चरित्र एक मजबूत फाउन्डेशन है जो जीवन की इमारत को कैसी भी परिस्थिति में टिकाकर रखता है। यदि हमारा चरित्र का फाउण्डेशन कमजोर है तो छोटी-छोटी परिस्थितियां भी जीवन की इमारत को हिला देती है और ताश के पत्तों की तरह गिरा देती है।

हमें अपने चरित्र का फाउण्डेशन मजबूत बनाना चाहिए ताकि पूरी आयु इसका ध्यान रख सके। हमें अपनी जीवन की बिल्डिंग को सम्मान के साथ खड़ी रखनी है तो चरित्र को मजबूत बनाना पड़ेगा अन्यथा खराब विचारों के कारण कर्मों का प्रवाह जीवन की बिल्डिंग को धरातल में ले जाएगा।

पहले ऐसा कहने में आता था कि 'धन गया तो कुछ नहीं गया, स्वास्थ्य गया तो कुछ गया और चरित्र गया तो सब कुछ चला गया।' परन्तु अब इससे उल्टा हो गया है- 'चरित्र गया तो कुछ नहीं गया, स्वास्थ्य गया तो कुछ गया, धन गया तो सब कुछ गया।' ऐसा मानने वाले लोग ही चरित्र को बेच रहे हैं इसलिए चरित्र की बहुत सम्भाल रखनी पड़ती है। धन और स्वास्थ्य से बढ़कर चरित्र का मूल्य है। चरित्र की रक्षा के लिए अपनी जान भी कुर्बान करनी पड़े तो हमें तैयार रहना चाहिए।

चरित्र एक साफ सफेद कपड़े की तरह है। उसमें खराब कर्मों का छोटा-सा दाग भी स्पष्ट दिखाई देता है। चरित्र पर लगे हुए दाग मेहनत करने पर भी मिटाए नहीं जा सकते। चरित्र शीशे के समान है। एक बार अगर टूट जाए तो उसे जोड़ा नहीं जा सकता। हम शीशे की वस्तुओं का तो बहुत ध्यान रखते हैं कहीं टूट न जाए परन्तु चरित्र का? चरित्र की सम्भाल रखने की जरूरत है। शीशे की चीजें अगर टूट गई तो दूसरी ला देंगे परन्तु चरित्र वापस नहीं ला सकते।

चरित्र ऐसा नाजुक फूल जैसा है जिसे जीवन की बगिया में बहुत सावधानी से रखना पड़ेगा। चरित्र हमारे जीवन रूपी बगिया की शोभा है। उसकी सम्भाल रखनी होती है। अवगुण रूपी कांटे तो नहीं है ना? वरना बगीचे की सुंदरता खराब हो जाएगी। चरित्र रूपी बगीचे की अच्छी तरह सम्भाल करेंगे तो दिव्य गुणों के अमूल्य पुष्प मिलेंगे और हमारी जीवन बेमिसाल हो जाएगी। किसी भी कीमत पर अपने चरित्र की सम्भाल करना जीवन का लक्ष्य होना चाहिए। चरित्र हमारी ऐसी प्रोपर्टी है जो अंत तक साथ चलेगी। हमारा चरित्र इतना महंगा है जिसे कोई भी कीमत पर, कभी भी बेच नहीं सकते।

वर्तमान कलियुग के समय में हम देखते हैं कि छोटी-छोटी बातों में भी चरित्र को दाग लगे ऐसा काम करते हैं। किसी का कत्ल करके, व्यसन, जुआ खेलकर, नारी उत्पीड़न इत्यादि बुरी आदतें चरित्र रूपी चादर को दाग लगाते हैं। थोड़ा धन पाने के लिए, बेटा माता-पिता का कत्ल करें, माता-पिता बच्चों का खून करें या इच्छित व्यक्ति को पाने के लिए एक पति पत्नी का और पत्नी अपने पति का खून करें या और भी बहुत छोटी-छोटी बातों के लिए खराब काम करके दाग लगाते हैं। भाई बहन की रक्षा करने के बदले बुरा काम करें तब? छोटी-छोटी कोमल फूल जैसी बेटियों के शील को दाग लगाने वाले असुरों की कोई कमी नहीं है। बहनें भी जब अपने चरित्र को बाजार में बेचने लगी है जिसका कोई मूल्य न कर सके, ऐसा अमूल्य चरित्र मुफ्त में बेचा जा रहा है। कहां गई हमारी संस्कृति और हमारे असूल?

कोई-कोई संस्कृति के उद्धारक और प्रखर प्रचारक, धर्म की ध्वजा पकड़ने वाले भी आज चरित्रहीन बनते जा रहे हैं। गलत काम करने के कारण चित्त की प्रसन्नता भी खत्म हो जाती है। जैसे आँख में पड़े तिनके के कारण हिमालय जैसा पहाड़ भी नहीं दिखता। सुख रूपी हजारों मील गाड़ी चलाने के बाद अगर एक नींद का झोंका आ जाए तो क्या होगा? जीवन का अंत भी हो सकता है! इसलिए सावधानी से चलाने की जरूरत है। छोटी सी भूल बहुत बड़ा नुकसान कर सकती है। जंगल में एक छोटी सी चिंगारी हजारों वृक्षों को खाक कर देती है। चरित्र का अमूल्य खजाना खरीद नहीं सकते तो बेच भी नहीं सकते क्योंकि चरित्र हमारी अपनी प्रोपर्टी है उसे सम्भालकर रखना चाहिए जिससे दूसरों को भी प्रेरणा मिल सके।

ब्र.कु. नीलम
पाटन

कहानी

दर्जी का भाग्य

एक बार किसी देश का राजा प्रजा का हाल-चाल पूछने के लिए गाँवों में घूम रहा था। घूमते-घूमते उसके कुर्ते का बटन टूट गया, उसने अपने मंत्री को कहा कि इस गाँव में कौन सा दर्जी है जो मेरे बटन को सिल सके। उस गाँव में सिर्फ एक ही दर्जी था जो कपड़े सिलने का काम करता था। उसको राजा के सामने ले जाया गया। राजा ने कहा कि तुम मेरे कुर्ते का बटन सिल सकते हो? दर्जी ने कहा कि यह कोई मुश्किल काम थोड़े ही है! उसने मंत्री से बटन ले लिया। धागे से उसने राजा के कुर्ते का बटन तुरंत टांक दिया। क्योंकि बटन भी राजा का था सिर्फ उसने अपना धागा प्रयोग किया था। राजा ने दर्जी से पूछा कि कितने पैसे दूं?

उसने कहा कि 'महाराज! रहने दो, छोटा सा काम था।' उसने मन में सोचा कि बटन राजा के पास था, उसने तो सिर्फ धागा ही लगाया है। राजा ने फिर से दर्जी को कहा कि नहीं-नहीं, बोलो कितने दूं? दर्जी ने सोचा कि 2 रूपए मांग लेता हूँ। फिर मन में यही सोच आ गई कि कहीं राजा यह न सोचें कि बटन टांकने के मेरे से 2 रूपए ले रहा है तो गांववालों से कितना लेता होगा क्योंकि उस जमाने में 2 रूपए की कीमत बहुत होती थी। दर्जी ने राजा से कहा कि 'महाराज! जो भी आपकी इच्छा हो, दे दो।'

अब राजा तो राजा था। उसको अपने हिसाब से देना था। कहीं देने में उसकी इज्जत खराब न हो जाए। उसने अपने मंत्री को कहा कि इस दर्जी को 2 गाँव दे दो। यह हमारा हुक्म है। यहाँ दर्जी सिर्फ 2 रूपए की मांग कर रहा था, पर राजा ने उसको 2 गाँव दे दिए।

इसी तरह जब हम प्रभु पर सब कुछ छोड़ते हैं तो वह अपने हिसाब से देता है और मांगते हैं तो सिर्फ हम मांगने में कमी कर जाते हैं। देने वाला तो पता नहीं क्या देना चाहता है। अपनी हैसियत से और हम बड़ी तुच्छ वस्तु मांग लेते हैं। इसलिए कहा जाता है, 'ईश्वर को सब अपना समर्पण कर दो, उनसे कभी कुछ न मांगों, जो वो अपने आप दें, बस उसी से संतुष्ट रहो। फिर देखो इसकी लीला। वारे के न्यारे हो जाएंगे।

रक्षा सूत्र – प्रेम के विस्तार का सूत्र

ब्र.कु.उर्मिला
शान्तिवन

रक्षा सूत्र पर्व का दूसरा नाम है- रक्षा बंधन। ऐसा बंधन जो रक्षा करे। प्रश्न उठता है कि रक्षा किससे चाहिए? आज न जंगली जानवरों का भय है, न आक्रमणकारियों का, न कंस, रावण आदि राक्षसों का, फिर रक्षा किससे चाहिए? हमें रक्षा चाहिए निर्लज्जता से, चमड़ी-दमड़ी के आकर्षण से, स्वच्छंदता से, नफरत, अविश्वास, भय से, काम, क्रोध, अहंकार आदि शत्रुओं से।

प्रेम फैलकर सरोवर बन जाता है

प्रेम जब आत्मा के स्रोत से बहता है तो पूर्ण शुद्ध होता है। जब स्रोत छोड़ सीमा में आ जाता है, संकुचित हो जाता है, स्वार्थ से सन जाता है, कामना से कलंकित हो जाता है। विकार बाहर से नहीं आये, प्रेम ही जब सड़ने लगा तो विकार बन गया। पानी जब ऊपर से बरसता है तो स्वच्छ होता है, भूमि पर आकर किसी गड्ढे में रुक जाता है तो कुछ ही दिनों बाद सड़ने लगता है। हमारा प्रेम भी हद के परिवार के गड्ढे में बंद हो जाता है, स्वार्थ की मिट्टी में मिल जाता है, कामना के कीचड़ से भर जाता है, तो उसमें दुर्गंध आने लगती है। प्रेम यदि फैल जाता है तो परिवार रूपी गड्ढे के बजाय सरोवर बन जाता है, उसमें कमल खिल जाते हैं और उसमें हंस आ जाते हैं। सीमित प्रेम ही तो काम बना, कामना पूरी न हुई तो क्रोध बना। वस्तुओं की आसक्ति लोभ बन गई, परिवार का राग, मोह बन गया। ऐसे विकृत प्रेम को निर्मल करने के लिए आत्म भाव चाहिए।

विश्व एक परिवार है

रक्षाबंधन पर्व आत्म-भाव जागृत करने का पर्व है। शरीर के भीतर रहने वाली हम सभी आत्मायें मूल रूप और मूल गुणों में समान हैं। एक पिता के बच्चे, एक ही घर से आये हैं, एक ही रंगमंच पर पार्ट बजा रहे हैं। हमारा खून, पसीना और आँसू, हमारी खुशी और गम की अनुभूतियाँ समान हैं, हम एक हैं, सारा विश्व एक परिवार है। वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना में भिगोकर हर कर्म और व्यवहार करें, इसका नाम है रक्षाबंधन।

बढ़ाएं प्रेम के दायरे को

जब प्रेम का विस्तार होता है, हम सुरक्षित हो जाते हैं और जब नफरत का विस्तार होता है तो हम असुरक्षित हो जाते हैं। तो आइये, इस रक्षाबंधन पर अपने प्रेम का विस्तार करें। अब तक हमारे प्रेम के दायरे में जितने भी लोग थे, उनमें कई और जोड़ लें। यदि हम हर रक्षाबंधन पर प्रेम के दायरे को बढ़ाते जायेंगे तो एक दिन सारा विश्व ही हमारे प्रेम के दायरे में समा जायेगा।

धागा है मर्यादा और पवित्रता का प्रतीक

आज तो इस त्योहार का अर्थ इतना साधारण कर दिया गया है कि इसे भाई द्वारा बहन को कुछ पैसे या सौगात देने का प्रतीक मात्र मान लिया गया है। कहीं-कहीं तो यह पैसा और सौगात भी प्यार बढ़ाने के स्थान पर मार अर्थात् मनमुटाव बढ़ाने का साधन बन जाते हैं। बेहद अर्थ वाले इस पर्व को इस तरह हद की भावनाओं से जब मनाया जाने लगता है तो परमात्मा पिता स्वयं अवतरित हो इसका सच्चा महात्म्य समझाते हैं और पर्व के पीछे छिपी शक्ति और ज्ञान की पहचान देकर मानव मात्र को पावन, बंधनमुक्त और गुणमूर्त बनाते हैं। रक्षाबंधन पर्व पर बहनें, भाई की कलाई पर एक पतला धागा बाँधती हैं (आजकल रंग-बिरंगी राखियाँ इस पर्व का आधुनिकीकरण है)। जैसे यादगार ग्रंथ रामायण में दिखाते हैं कि सीता, एक तिनके की ओट से रावण जैसे राक्षस के कोप और हिंसा से बच गई। तिनका क्या था- धर्म का प्रतीक, सीता के अखण्ड ब्रह्मचर्य और सतीत्व का प्रतीक। इसी प्रकार कलाई पर बँधा धागा भी मर्यादा का, पवित्रता का और प्रतिज्ञा का प्रतीक है।

धागा है कामान्तक, क्रोधान्तक ...शस्त्र

तिनका अपने आप में कुछ नहीं पर सीता जैसी ताकतवर आत्मा ने उसे हाथ में उठाया तो वह शक्तिशाली बन गया। इसी प्रकार यह धागा भी अपने आप में कुछ नहीं है परंतु जब कोई ऐसी पावन आत्मा जिसके मन पर विषय-वासना का कुठाराघात न हो, क्रोध की कालिमा न हो, लोभ का दलदल न हो, मोह का अंधकार न हो, अहंकार का आवरण न हो, ईर्ष्या, द्वेष, कामनाओं का कीचड़ न हो – इसे दूसरे की कलाई पर बाँधती है तो यह कामान्तक, क्रोधान्तक, लोभान्तक ... शस्त्र का काम करता है। ब्रह्माकुमारी बहनें, ऐसी ही पावन बहनें हैं जो इस विकारी संसार में कमलवत् जीवन-यापन करती हैं। ये बहनें, रक्षाबंधन के पावन पर्व पर बिना किसी जाति, धर्म, कुल, रंग, भाषा के भेद के मानव मात्र को नि:शुल्क यह धागा बाँधती हैं।

धागे में समाई है पवित्र प्रतिज्ञा

यह धागा एक प्रकार की पवित्र प्रतिज्ञा है परमात्मा के साथ। बाँधने वाला तो पहले ही प्रतिज्ञाबद्ध है और बँधवाने वाला भी, उसी प्रतिज्ञा में, मर्यादा में बद्ध हो जाता है। वह दृढ़ संकल्प करता है कि जिस त्यागी, तपस्वी ब्रह्मचारिणी बहन को माध्यम बनाकर भगवान शिव ने मुझे यह धागा बाँधा है, मैं उसकी बताई श्रीमत पर अवश्य चलूँगा। किसी भी परिस्थिति में धागे की मर्यादा को मलीन नहीं होने दूँगा। आत्मा में किसी भी मनोविकार का संकल्प भी प्रवेश नहीं होने दूँगा। प्रवेशता के सभी द्वारों (इन्द्रियों) पर कड़ा पहरा लगाकर उन्हें कमलवत् बनाकर ही रहूँगा। मन ही मन बार-बार दोहराई जाने वाली यह प्रतिज्ञा ही अदम्य मनोबल का काम करती है क्योंकि मन इसमें बिजी हो जाता है और विकारों तथा व्यर्थ से छुटकारा पा जाता है। कलाई पर बाँधे गये इस छोटे-से बंधन का अर्थ है आत्मा मनोविकारों से रक्षा की प्रतिज्ञा में बँध गई। जब तक प्रतिज्ञा है, रक्षा भी है। प्रतिज्ञा टूटी तो रक्षा भी नहीं रहेगी।

तिलक और मिठाई का रहस्य

धागा बाँधने के साथ-साथ इस प्रतिज्ञा को मजबूती प्रदान करती है- मिठाई। भगवान का प्रेम मिठास भरा है, उस मिठास में भूतकाल की सब कड़वाहटें भुलाई जा सकती हैं। मुख मीठा करना अर्थात् मन, वचन, कर्म को मीठा बनाना। रक्षासूत्र बाँधा जाता है हाथ में पर परिवर्तन की सारी प्रक्रिया का केन्द्र तो आत्मा है। अत: आत्मा को जागृत करना, उसे उसकी शक्तियों और पवित्रता का अहसास कराना भी उतना ही जरूरी है। आत्मा तक पहुँच बनाने का साधन है- तिलक। मस्तक पर चन्दन का तिलक लगाकर हम युगों से तप्त (जलती हुई) आत्मा को शीतल करते हैं और उसे उसके स्वमान में टिकाते हैं। मस्तक, मुख और कलाई – इन तीनों को आधार बनाकर हम यही संदेश देते और लेते हैं कि पवित्रता आत्मा का स्वधर्म है, पवित्रता ही सुख-शान्ति की जननी है। **अत: पवित्र बनो, योगी बनो।**

विभिन्न स्थानों पर हुई शिक्षा प्रभाग की सेवाओं की झलकियां

आबू धाबी।

नैनिताल (उत्तराखंड)।

शान्तिवन (आबू रोड)।

गांधीनगर (गुजरात)।

वैंगलोर (कर्नाटक)।

वैंगलोर (कर्नाटक)।

वर्धा (महराष्ट्र)।

शान्तिवन (आबू रोड)।

1. लेगोस (नाइजीरिया)। नाइजीरिया के पूर्व राष्ट्रपति ओलुसेगुन ओबासांजो को ब्रह्माकुमारीज़ संस्था में पुनः पधारने हेतु ग्लोबल समिट-कम-एक्सपो प्रोग्राम में निमंत्रण देते हुए ब्र.कु. मृत्युंजय। साथ हैं लेगोस की ब्र.कु. गौतमी और ब्र.कु. सुप्रिया। **2. नई दिल्ली।** विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री डॉ. हर्षवर्धन को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. मृत्युंजय एवं ब्र.कु. सुमन। **3. नई दिल्ली।** पूर्व केन्द्रीय मंत्री कलराज मिश्र और पूर्व शिक्षामंत्री, उत्तर प्रदेश के अमरजीत सिंह जनसेवक को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. मृत्युंजय एवं ब्र.कु. सुमन। **4. जमशेदपुर (झारखंड)।** झारखंड के राज्यपाल श्रीमती द्रौपदी मुर्मू जी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. मृत्युंजय एवं ब्र.कु. अंजू। **5. ज्ञान सरोवर (आबू पर्वत)।** 'राजयोगा थॉट लेब' प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए दिल्ली के उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया, केन्द्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति एच.एम. महेश्वरैय्या, ब्र.कु. मृत्युंजय, ब्र.कु. सुदेश, ब्र.कु. मुकेश, ब्र.कु. सुप्रिया, ब्र.कु. चित्रा तथा अन्य। **6. शान्तिवन (आबू रोड)।** 39वें अखिल भारतीय बाल व्यक्तित्व विकास शिविर के खेलकूद प्रतियोगिता में विजेता बच्चों को दादी रतनमोहिनी जी ने सर्टिफिकेट देकर पुरस्कृत किया।

Education Wing HQs. Office
B.K. Mruthyunjaya, Vice-Chairperson, Education Wing
Brahma kumaris, Value Education Centre
Anand Bhawan, 3rd Floor, Shantivan, **Abu Road-307510 (Raj.)**
E-mail: educationwing@bkivv.org
Education Wing, National Co-ordinators Office
B.K. Dr. Harish Shukla, National Coordinator, Education Wing
Sukh Shanti Bhawan, Kankaria, **Ahmedabad-380022 (Guj.)**
Mob. No. : +91 9427638887 **Fax :** 079-25325150
E-mail: harishshukla31@gmail.com

To,